प्रकाश पर्येकार

सांपळा

झिपरो कालू बैल को लेकर नदी के किनारे से गाँव की ओर आ रहा था। कालू बैल लँगड़ाते हुए उसके आगे-आगे चल रहा था और वह धुआँधार गालियाँ बके जा रहा था। झिपरो की ऊँची आवाज़ सुनकर तास खेल रहे सात-आठ नवयुवक सब कुछ छोड़कर झटके से उठ खड़े हुए। सीवान से महादई नदी में कपड़े धोने आ रही यमुना आका ने सोचा—अरे! झिपरो को क्या हो गया? सोचती हुई वह भी वहीं कुछ देर के लिए खड़ी हो गई। गाँव के लोग भी अपना-अपना काम छोड़कर रास्ते पर आ गए।

झिपरो की स्वभावत: आदत थी कि वह बिना किसी लगाम के बोलता था लेकिन किसी को गाली नहीं देता। यह बात छोटे-बड़े सभी जानते थे। पिछले एक साल से उसको किसी को बुरा-भला कहते हुए नहीं सुना गया। हाँ, उसकी एक आदत ज़रूर थी कि जब वह किसी को गालियाँ देना शुरू कर देता तो उसे रोकना ज़रा मुश्किल होता।

''हरामी कहीं के! चर्बी निकालने आए हैं। मरने दो सालों को...। मृगडाह में बैल को निकालना था लेकिन उन सालों ने इसे पहले ही खा डाला।'' सभी लोगों को जमा होते देखकर उसे और भी जोश आ गया।

''अरे! झिपरो क्या हो गया, पहले यह तो बता?'' गाँव के एक बूढ़े थपा दादा ने उसे रोककर पूछा।

''क्या बताऊँ? मेरी क़िस्मत ही खोटी है...मेरे कालू का पाँव काम से गया। कल मृगडाह में जुताई करेगा कि नहीं, किसे मालूम?'' झिपरो कालू के लँगड़े पाँव को दिखाते हुए और भी क्रोधित हो उठा।

''हाँ सही!'' सभी लोग पाँव देखकर अचंभित हो गए।

''किसी के बाग़-बग़ीचे में गया होगा और उसने कोंयते से मार दिया होगा।'' वहाँ मौजूद भीड़ में से किसी एक ने कहा।

''तेरे बैल को किसने क्या कर दिया?'' थपा दादा ने रक्त बहते हुए पाँव को ध्यान से देखकर पूछा।

''नदी के किनारे घड़ियाल पकड़ने आए हुए लोगों ने सब जगह सांपळा बिछा रखा है। मवेशियों के घूमने-फिरने तक की जगह नहीं छोड़ी है।''

कोंकणी रचनाकार प्रकाश पर्येकार की कहानियाँ एवं लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। संपर्क : प्रवक्ता, कोंकणी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा 403206

अनु. : 1957 में जन्मे रवींद्रनाथ मिश्र की कई पुस्तकें एवं कोंकणी हिंदी की अनूदित पुस्तकें प्रकाशित। संपर्क : रीडर, हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा 403206

"पिछले साल जो लोग चर्बी निकालने आए थे, शायद वही लोग होंगे।" थपा दादा ने अंदाज़ लगाया। अपने पाँव के जोड़ों के दर्द के लिए वह पिछले साल शीशी भरकर तेल लाया था और उसे लगाने पर उसे आराम भी हुआ था।

ये लोग मूलत: राजस्थान के निवासी बनजारा लोग हैं। काली चमड़ी, घने चीकट काले-काले बाल, चपटी नाक, क़द से छोटे किंतु भरे बदन वाले, मैले-कुचैले कपड़े पहने, चर्बी के तेल की बदबू भरी गंध—प्रकृति की गोद में पले-बढ़े इनके नंग-धड़ंग शरीर वाले होनहार बच्चे...।

यह इधर-उधर घूमने वाली बनजारा लोगों की ऐसी जमात है जो कि पेट के लिए बाल-बच्चों एवं घर-गृहस्थी के सारे सामान के साथ जहाँ मन में आया वहीं नदी के किनारे अपना घर बसा लेते हैं। ये लोग आजीविका के लिए अपनी बुद्धि से लोहे के 'सांपळे' तैयार कर घड़ियाल पकड़ते हैं और उसकी चर्बी का तेल निकालकर भिन्न-भिन्न रोगों के इलाज के लिए बेचते हैं। स्वयं का पेट भरने के लिए ये लोग घड़ियाल का मांस भूनकर और कभी-कभी पकाकर भी खाते हैं। संयोग से यदि कोई और जानवर फँस गया तो उसे मारकर उसका मांस लोगों को बेचते हैं।

"मेरे बैल का पाँव सांपळे में फँसा, ऊपर से वह मुझे ही घूर-घूरकर मारने के लिए दौड़ पड़ा। मैंने भी बिना समय गँवाए उसके गाल पर ज़ोर से थप्पड़ दे मारा। उसके गाल पर लालिमा छा गई।" झिपरो ने अपनी आत्मप्रशंसा में सब कुछ कह सुनाया।

"अच्छा किया! उसे ऐसा ही चाहिए था।" भीड़ में से किसी ने कुनकुनाते हुए कहा।

"हमारे गाँव में बाहर के लोग आकर दादागिरी दिखाते और हम चुपचाप देखते हैं। मेरे विचार से तो ऐसे लोगों को गाँव से धक्के मारकर बाहर निकाल देना चाहिए।" विनू ने एक झटके में सब कुछ कह दिया।

"ये सही है! आज झिपरो के बैल का पैर सांपळे में फँसा, कल हममें से किसी के गोरु का पैर सांपळे में फँस सकता है। फिर क्या? तब भी हम चुप होकर बैठे रहेंगे।" बूढ़े झालम्या ने लटपटाती हुई ज़बान खोली।

"सही है! सही है! इन बनजारों को सज़ा मिलनी ही चाहिए।" भीड़ में से दो-तीन लोग चिल्लाए।

"क्या हुआ, अरे! तुम लोग क्यों चिल्ला रहे हो?" हरगो भीड़ को चीरता हुआ बाहर आया।

"झिपरा के बैल का पाँव सांपळे में फँसकर भथुर गया है।"

"किसके सांपळे से?"

"नदी के किनारे ऊपर वाले भाग में बनजारे घड़ियाल पकड़ने आए हैं।"

"बैल का पाँव तो गया ही, ऊपर से वह बनजारा झिपरा को मारने भी दौड़ा।"

"अरे! बनजारे की इतनी हिम्मत? बता तो! नदी के किस तरफ़ है वह?" ग़ुस्से के कारण उसके माथे की लकीरें तन गईं।

"धवळांतले घाट के पास" हरगो के इतना कहने से झिपरो को बल मिला। वह मन-ही-मन प्रसन्न हुआ। दोपहर की धूप, भूखे पेट, हर एक का माथा गरम हो गया। वहाँ पर मौजूद भीड़ में नवजवानों और युवाओं ने हाँ में हाँ मिलाई। उनमें से हरगो क्रोधी स्वभाव वाला था। ग़ुस्से में आने पर बिना आगा-पीछा देखे वह मारने के लिए दौड़ पड़ता था।

"चलो देखते हैं कि वह बनजारा कहाँ मरा पड़ा है?" हरगो ने ललकारा।

"चलो चलते हैं।" ऐसा कहते हुए दो-तीन युवक उसके साथ नदी की ओर जाने के लिए तैयार हो गए। उनमें से अवसरवादी लोग एक-एक करके खिसकने लगे।

बाड़े में गड़े हुए बाँस को झट से निकालकर राजाराम ने कंधे पर रखा। फयदू ने कमर में धोती की खूँट में कोंयते को खोंसा।

''जाने दो बनजारे को, हममें से कोई एक जाकर उसे समझा-बुझा दे, मार-पीट करने से क्या मिलेगा?''

थपा दादा ने उन लोगों को समझाने की कोशिश की लेकिन वे लोग कहाँ मानने वाले थे? उनकी बात को ठुकराते हुए वे सब नदी की ओर चल पड़े।

आगे तिराहे पर रंगा की दारू की दुकान पर सभी ने थोड़ी-थोड़ी दारू पी और आवाज़ करते हुए नदी के किनारे की ओर बढ़ चले। वे लोग झाड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए बनजारे के रहने के स्थान के क़रीब पहुँचे। वहाँ से कुछ दूर एक बड़े झाड़ के नीचे से धुआँ ऊपर उठते हुए देखकर फयदू चिल्ला उठा।

''वह देखो झाड़ के नीचे से धुआँ उठ रहा है।'' हाँ! हाँ! कहते हुए वे सब उस तरफ़ दौड़ पड़े। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि पाँच-छह साल के बिच्चू को लेकर उसकी माँ आग में घड़ियाल भून रही थी।

''बोल हरामज़ादी! तेरा मरद किधर गया?'' हरग्या ने ऊँची आवाज़ करके उसे डराया। सबके हाथ में कोई-न-कोई हथियार देखकर वह सकपका गई कि अब मैं क्या करूँ? क्या बोलूँ? उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया। वह घबराई हुई नज़रों से उन लोगों को एकटक देखती रही। उसकी ज़बान ऊपर टँग गई और सारा शरीर थर-थर काँपने लगा। बिच्चू भी डर के मारे माँ की गोद में घुस गया।

''मामी! तू क्यों गूँगी बनी बैठी है? बोल! तेरा मरद कहाँ गया? बोल नहीं तो मारूँगा, तेरी कमर टूट जाएगी।'' राजाराम ने डंडे को चारों ओर घुमाते हुए कहा। पिछले चार-पाँच साल

से ये बनजारे गोवा में आकर यहाँ घड़ियाल की चर्बी निकालने का काम करते रहे हैं। उन्हें कोंकणी अच्छी तरह समझ में आती है और दूसरे समझ लें, इतना बोल भी सकते हैं। लेकिन इस समय वह कुछ भी नहीं बोली। निहाई पर चढ़ने के पहले बकरी क़साई को जिस प्रकार देखती है। वह रुआँसी होकर उन लोगों को उसी प्रकार देख रही थी।

''मामी जल्दी बोल! क्या तेरी कमर पर ताल मारूँ?'' हरग्या ने ज़ोर से लात उठाई लेकिन मारी नहीं। इतने में बिच्चू ज़ोर से चिल्लाया और माँ को कसकर पकड़ लिया। बिच्चू की चीख़ उसके बाप के कान में पड़ी जो कि पास में ही लकड़ी लाने गया था। मुसीबत के समय निकलने वाली उसने दोहरी हूँक ज़ोर से लगाई। उसकी आवाज़ सुनते ही मामी को थोड़ा ढाँढ़स बँधा। थोड़ी देर बाद उसका मरद डर के मारे हाँफते हुए वहाँ आ पहुँचा।

वह सबको वहाँ देखकर हैरान हो गया। क्या हुआ? उसे कुछ भी मालूम नहीं पड़ा। उसने अपनी औरत पर नज़र डाली। उसकी आँखें भरी-भरी थीं और बिच्चू ज़ोर-ज़ोर से हाँफ रहा था। हिम्मत करके वह आगे बढ़ा।

''किधर गया था साला! मैला खाने?'' बिनू ऊँची आवाज़ में बोला।

''सबसे पहले बैल का आधा दाम दे दे।'' फयदू कमर के फाटे से कोंयता निकालते हुए बोला।

''हमारी कुछ ग़लती नहीं है मालिक! तुम्हारा बैल रात के समय सांपळे में फँसा। हम लोग दिन में सांपळे निकालकर रखते हैं।''

''अच्छा! तुम्हारी ग़लती नहीं है क्या? हमारी मर्ज़ी है कि हम अपने गोरु को कभी भी कहीं छोड़ें। क्या यह तुम्हारे बाप का इलाक़ा है?'' हरगो आगबबूला होकर भड़क उठा।

''हमारा बैल सांपळे में फँस गया और तू ऊपर से दादागिरी दिखा रहा है!'' राजाराम ग़ुस्से से उबल पड़ा।

''ना-ना मालिक! भगवान की क़सम। मैंने दादागिरी नहीं की। मालिक भला मैं दादागिरी कर सकता हूँ?'' उसने बड़े दीन भाव से हाथ जोड़ते हुए कहा।

''मार-पीट से हमें कुछ लेना-देना नहीं। जल्दी पैसा निकालो।''

''मालिक हमारे पास पैसा कहाँ से आएगा?...यहाँ आए अभी दो ही दिन तो हुए। अभी तक चर्बी वाला एक भी घड़ियाल नहीं मिला। आज जो मिला भी था उसमें चर्बी नहीं थी।''

''यह किसे सुना रहा है? हमें। अरे! हम गोवावासियों को तुम बनजारे लोग चकमा देते आए हो। गोवा में आकर तुम लोगों को कुछ ज़्यादा ही मस्ती...बोल! पैसा देता है कि नहीं? नहीं तो तेरा सब बर्तन-भाँड़ा तोड़ दूँगा।'' बिनू ने उसको धमकाया।

बर्तन तोड़ने की बात सुनते ही बहुत देर से चुपचाप बैठी मामी ने मुँह खोला।

''मालिक मैं तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ। ऐसा मत करो।'' लेकिन राजाराम बिना कुछ और देर किए हुए बर्तन-भाँड़ों पर डंडे बरसाने लगा। एल्युमिनियम के बर्तन पिचककर भाकरी बन गए। चर्बी निकालने वाले मिट्टी के बर्तन चूर-चूर हो गए। वे दोनों शांत रहे। उनकी आँखों से आँसुओं की धार बह निकली। दोनों की ज़बान पर मानों ताला लग गया हो। अवाक् बने सब कुछ देखते रहे।

''अरे! मामा क्या देखता है? अगर पैसा नहीं दे सकता तो सांपळे हमें दे दो।'' फयदू ने गिद्ध की-सी नज़र डालते हुए कपड़े से ढके हुए सांपळों को देख लिया।

''हमें सांपळे दे दो!'' फयदू के ये शब्द उसके हृदय में काँटे की तरह चुभ गए। वह घबराने लगा और उसके पाँव तले की ज़मीन खिसकने लगी।

"हमारी खेती-बारी को नुकसान पहुँचाने वाले जानवरों को पकड़ने के लिए यह काम आएगा।" बिनू ने कहा।

"सही कह रहा है, मैंने ऐसा सोचा ही नहीं।" राजाराम ने कहा।

"हमारे झाड़-झंखाड़ में साही (काँटेदार जानवर) ख़ूब आती हैं। सांपळा लगाने से वह ज़रूर मिलेगी।" हरग्या के मुँह से लार टपक पड़ी।

"लेकिन हम लोगों को तो सांपळा लगाने का तरीक़ा मालूम ही नहीं?" फयदू ने यह एक मुख्य समस्या रखी। दूसरे लोग चारों सांपळों को खींचकर अपनी तरफ़ ले आए।

"यह मामा हमें बताएगा कि सांपळा कैसे रखा जाता है? नहीं तो साले की धुलाई करेंगे।" वे सब घूर-घूरकर उसे देखने लगे।

"मालिक मैं तुम लोगों के पाँव पकड़ता हूँ...सांपळा मत ले जाओ। हम काम करके तुम्हारा पैसा भर देंगे।"

"चुप! हमें जल्दी से बताओ कि सांपळा कैसे लगाया जाता है? हम लोगों को भूख लगी है।"

"मालिक मैं दया की भीख माँग रही हूँ। हमारे साँपळे मत ले जाइए।" बिलखती हुई उसकी औरत ने कहा।

"चुप बैठ...सांपळा लगाने का तरीक़ा नहीं बताओगे तो ऐसे ही लेकर चल देंगे।" फयदू ने उसमें से एक सांपळा उठा भी लिया। जिसे देखकर मामा की आँखों में जीवन में पहली बार आँसू बह निकले। उस समय उसको अपने बाप की बातें याद आने लगी।

"जीवन में कितनी भी मुसीबत क्यों न आए लेकिन सांपळा किसी को मत देना और उसे लगाने का तरीक़ा भी मत बतलाना। सांपळा हमारा पेट है।" बाप की बात याद कर वह थर-थर काँपने लगा। उसकी देह ठंडी पड़ गई। सांपळा लगाने की विधि बताने का मतलब हुआ कि अपने पेट पर लात मारना। अगर ऐसा हुआ तो कल से ये लोग घड़ियाल की चर्बी निकालना शुरू कर देंगे। तो फिर हमारे पेट का क्या होगा?...नहीं, नहीं ऐसा नहीं होना चाहिए बाप की बातों को निभाना ही होगा। यह विचार उसके दिमाग़ में मँडराने लगा। उसने अपने माथे पर हाथ रखकर आँखें बंद कर लीं, जो होता है होने दो। देखता हूँ, मन-ही-मन सोचकर वह वहीं बैठ गया। उसे चुपचाप बैठा देखकर ये लोग आगबबूला हो उठे।

"हे मामा! जल्दी बताते हो कि नहीं? क्या खाने भर को दूँ? देखिए अभी शुग्गे की भाँति बोल रहा था।" राजाराम ने डंडे की नोक उसके पेट में धँसाई! लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ।

"यह ऐसे नहीं सुनेगा इसकी पिटाई करो।" गूँगा बना बैठा देखकर हरग्या ने कहा, "मारो साले को!"

राजाराम ने बिना देर किए तीन-चार डंडे उसकी पीठ पर लगाए। इतने में उसकी औरत ज़ोर से चिल्ला पड़ी। बिच्चू गला फाड़-फाड़कर रोने लगा। दर्द के मारे मामा घायल साँप की भाँति छटपटाने लगा। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। वह बिना किसी विरोध के सब कुछ सहता गया।

"चलो सांपळे लेकर चलते हैं।" ऐसा कहते हुए ज़ंजीर में लगे हुए सांपळे को हाथ में झुलाते हुए वे लोग चल पड़े।

"मालिक! मालिक! सांपळे मत ले जाइए।" उसके भूखे पेट से अंतिम कराह भरी आवाज़ निकली लेकिन उन लोगों ने उसकी आवाज़ अनसुनी कर दी। असहाय अवस्था में उसकी रुआँसी आँखें अपलक नेत्रों से उन्हें देखती रही जब तक कि वे आँखों से ओझल नहीं हो गए। उनके पेट झुलते-झुलते न जाने कहाँ जा रहे हैं। उन सांपळों के साथ...